जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 51 संख्याः 32 प्रभात कोटा, शनिवार, 15 नवम्बर, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

कांग्रेस अभी भी स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि बिहार में वो जायज तरीके से हारी है

कांग्रेस का मानना है कि ''द मैन ऑफ द मैच'' चुनाव आयुक्त हैं, जिन्होंने आँखें बंद करके रखीं, जब भाजपा ने सभी स्थापित तौर तरीकों का उल्लंघन कराया, चुनाव अभियान के दौरान

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **कांग्रेस के आरोपों के अनुसार, पैंसठ लाख मतदाताओं का वोटर लिस्ट से नाम काटा गया था तथा देश भर से मतदाता भेजे गये थे, भाजपा के पक्ष में वोट करने के लिए।**
- **कांग्रेस का यह भी आरोप है कि बिहार के माइग्रेंट वोटर को मतदान के लिए लाने की पूर्ण व्यवस्था की गई, फूलमाला व स्वागत गेट बनाकर।**
- **कांग्रेस की यह भी शिकायत है कि दस हजार रूपए एक करोड़ महिला मतदाताओं को बांटे गए, पर, चुनाव आयोग चुप रहा।**
- **कांग्रेस के अनुसार, भाजपा व चुनाव आयोग के बीच ''गठबंधन'' है और इसीलिए प्र.मंत्री मोदी ने नारा दिया है, ''गंगा बिहार से बंगाल बहती है'' और अब बंगाल के चुनाव में भी यह संबंध उपयोग में लाए जाएंगे।**

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। बिहार चुनाव में भाजपा और जद यू को भारी जीत मिली है, जबकि राजद को भारी हार का सामना करना पड़ा है।

एन.डी.ए. ने 200 का आंकड़ा पार कर लिया, जो कई लोगों के लिए चौंकाने वाला है, क्योंकि ज़मीनी हालात इतनी बड़ी जीत का संकेत नहीं दे रहे थे।

कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि ''मैन ऑफ द मैच'' चुनाव आयुक्त रहे, जिन्होंने आँखें बंद कर लीं और सोते रहे, जबकि भाजपा ने चुनाव प्रचार के दौरान सभी नियमों और मानकों का खुलकर उल्लंघन किया।

प्रशांत किशोर को भी बड़ा झटका लगा और उनका प्रदर्शन बिल्कुल शून्य रहा, जिससे वे चुनावी मुकाबले से बाहर हो गए।

महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव चुनाव जीत गए, लेकिन दिन के कुछ समय तक वे पीछे चल रहे थे।

सबसे बड़ा झटका राहुल गांधी को लगा, जिनकी कांग्रेस पार्टी 61 में से सिर्फ 5 सीटें जीत सकी। भाजपा नेताओं ने उनके नेतृत्व की कड़ी आलोचना की, और कांग्रेस के भीतर भी उनके कामकाज और पार्टी चलाने के तरीके पर तीखी आलोचना बढ़ रही है।

राहुल और प्रियंका दोनों देश से बाहर हैं, और कांग्रेस नेतृत्व की ओर से इस भारी हार पर कोई ठोस बयान सामने नहीं आया है।

वाम दल (लेफ्ट पार्टियाँ), जिन्हें अच्छे नतीजों की उम्मीद थी, वे भी पूरी तरह निराश हैं और राजनीतिक तस्वीर से लगभग बाहर हो गये हैं।

कांग्रेस पुनः पुरजोर ढंग से कह रही है कि असली कहानी भाजपा नेतृत्व के चुनावी प्रबंधन और चालों की है, जिसने इस जीत को संभव बनाया, और भाजपा के अंदर के कई नेता और कार्यकर्ता भी इससे चकित रह गए हैं।

कांग्रेस ने यह भी आरोप लगाया कि 65 लाख से ज़्यादा मतदाताओं के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुधांश पंत सोमवार को श्रीनिवास को मुख्य सचिव का कार्यभार सौपेंगे

सुधांश पंत

वी. श्रीनिवास

जयपुर, 14 नवंबर। वर्ष 1989 बैच के वरिष्ठ आईएएस वी. श्रीनिवास राजस्थान के नये मुख्य सचिव का कार्यभार सोमवार को वर्तमान मुख्य सचिव सुधांश पंत से ग्रहण करेंगे। सुधांश पंत दिल्ली में कैबीनेट सैक्रटेरियट में ओएसडी बनाये गये हैं तथा वे मंगलवार को अपना काम संभालेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक बार फिर नीतीश भाजपा को उनकी पार्टी का मु.मंत्री बनाने का आग्रह करेंगे

भाजपा यह प्रस्ताव स्वीकार ना करके मुख्यमंत्री बनायेगी नीतीश को

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **यह प्रक्रिया केवल मीठी औपचारिकता ही नहीं है, इसमें यह सत्य भी छुपा है कि केन्द्र में एनडीए सरकार चलाने के लिए नीतीश के सांसद अनिवार्य हैं।**
- **अतः भाजपा कभी भी नीतीश को बिहार का मुख्यमंत्री न बनाने का रिस्क नहीं ले सकती।**

नई दिल्ली, 14 नवंबर। भाजपा ने बिहार की राजनीति में पहली बार वह बाधा पार कर ली है, जो अब तक उसके लिए मुश्किल रही थी। अब पार्टी के पास ऐसा जनादेश है कि वह नीतीश कुमार की जेडीयू के सहारे के बिना भी राज्य पर शासन कर सकती है।

बिहार के मुख्यमंत्री और जेडीयू नेता नीतीश कुमार ने अपनी पार्टी की सीटें लगभग दोगुनी कर युद्ध तो जीत लिया है, लेकिन इस चुनाव में वे, भाजपा से राजनीतिक लड़ाई हार गए हैं।

एनडीए ने 200 से अधिक सीटों की प्रचंड जीत हासिल की है, जबकि विपक्षी महागठबंधन 40 से भी कम सीटों पर सिमट गया। 243 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा 90 से अधिक सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। छोटे-छोटे मित्र दलों, चिराग पासवान की एलजेपी (आरवी), जीतन राम मांझी की एचएएम, उपेन्द्र कुशवाहा की आरएलएम और कुछ निर्दलीयों सहित, भाजपा अब 122 के बहुमत के आंकड़े के बिल्कुल करीब है।

सूत्रों का कहना है कि नीतीश कुमार 2020 की तरह इस बार भी भाजपा से आग्रह कर सकते हैं कि वह अपना मुख्यमंत्री चुने। लेकिन संभावना यह है कि भाजपा नीतीश के मुख्यमंत्री बने रहने पर जोर देगी, क्योंकि केन्द्र में भाजपा को अभी भी जेडीयू के समर्थन की ज़रूरत है। इसलिए लगता है कि नीतीश कुमार ही 10वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे।

उत्तर प्रदेश के विपरीत, भाजपा अब तक बिहार में अकेले अपने दम पर सत्ता में नहीं आ सकी थी। लेकिन आज के नतीजों के बाद, भगवा पार्टी को शासन की कुंजी अपने हाथों में मिलती दिख रही है। हालांकि जेडीयू की सीटें बढ़ी हैं, लेकिन नीतीश कुमार की गिरती सेहत और पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं, जैसे संजय झा और लल्लन सिंह का भाजपा के क़रीब जाना जेडीयू को कमजोरी की ओर ले जा रहा है। फिर भी उनकी पार्टी और एन.डी.ए. की भारी जीत ने नीतीश को यह मौका दिया है कि वे अपने राजनीतिक करियर का समापन गरिमा और सम्मान के साथ कर लें। देखना यह है कि वे अभी मुख्यमंत्री पद छोड़ने का निर्णय लेते हैं, या आगे चलकर। जेडीयू के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, ''यह फैसला केवल नीतीश ही ले सकते हैं।''

महागठबंधन के दलों का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। लेकिन असली संकट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारी ''सैटबैक'' के बावजूद आरजेडी को भाजपा व जद (यू) से ज्यादा वोट मिले

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **आरजेडी ने 143 सीटों पर चुनाव लड़ा था तथा उसका ''वोट शेयर'' 22.84 प्रतिशत रहा, जो भाजपा के ''वोट शेयर'' से 1.86 प्रतिशत ज्यादा है तथा जद (यू) के वोट शेयर से 3.97 प्रतिशत अधिक है।**

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। तेजस्वी यादव की अगुवाई वाली राजद को अब तक अपने प्रतिद्वंद्वियों, भाजपा और नीतीश कुमार की जद यू से ज़्यादा वोट मिले हैं।

बिहार में सत्ता पर क़ाबिज़ नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) दोबारा सरकार बनाता हुआ दिख रहा है, वहीं, विपक्ष की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (राजद), जिसे 2010 के बाद से अपना सबसे बड़ा झटका झेलना पड़ सकता है, इस बात से थोड़ी राहत में है कि उसे सबसे ज़्यादा वोट शेयर मिला है। वोटों की गिनती शुरू होने के छह घंटे बाद तक, तेजस्वी यादव की पार्टी को भाजपा और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जेडीयू से ज़्यादा वोट मिले हैं।

राजद, जिसने 243 सदस्यीय विधानसभा की 143 सीटों पर चुनाव लड़ा था, को अब तक 22.84 प्रतिशत वोट मिले हैं, जो भाजपा से 1.86 प्रतिशत और जद यू से 3.97 प्रतिशत ज़्यादा है।

2020 के विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरने वाली राजद इस बार सिर्फ 27 सीटों पर आगे चल रही है। यह प्रदर्शन राजद का 2010 के बाद दूसरा सबसे खराब प्रदर्शन माना जा रहा है, जब पार्टी को सिर्फ 22 सीटें मिली थीं।

विपक्षी महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद का चेहरा, तेजस्वी यादव अपनी राघोपुर सीट पर जीत गए हैं, लेकिन, दिन में काफी समय तक पीछे चल रहे थे। एक बार तो वे भाजपा के सतीश कुमार से 2,288 वोटों से पीछे थे।

महागठबंधन में राजद के साथी दल भी काफी पीछे हैं। कांग्रेस 4 सीटों पर आगे है, सीपीआईएम (एल) 4 पर और सीपीआई 1 सीट पर आगे है।

वहीं दूसरी तरफ, एनडीए 201 सीटों पर आगे है। भाजपा 91 सीटों पर, जेडीयू 81 पर, केन्द्रीय मंत्री चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) 21 पर, केन्द्रीय मंत्री जीतन राम मांझी का हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा 5 पर, और राज्यसभा सांसद उपेन्द्र कुशवाहा का राष्ट्रीय लोक मोर्चा 4 सीटों पर आगे हैं।

प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी और मुकेश सहनी की विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) उन सभी सीटों पर पीछे हैं, जहां उन्होंने चुनाव लड़ा है।

बिहार में मतदान दो चरणों में हुआ था, 6 नवंबर और 11 नवंबर को, और इस बार 66 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ, जो 1951 के बाद राज्य में सबसे अधिक है।

पुरुष मतदाताओं ने 62.8 प्रतिशत और महिला मतदाताओं ने 71.6 प्रतिशत मतदान किया।

राज्य सरकार 15 अप्रेल तक पंचायत व निकाय चुनाव कराए

- **राजस्थान हाई कोर्ट की खंडपीठ ने निर्देश देते हुए परिसीमन की प्रक्रिया 31 दिसम्बर तक पूरी करने को कहा।**

जयपुर, 14 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिए हैं कि वह प्रदेश की पंचायतों और नगर निकायों के चुनाव 15 अप्रैल तक कराए। इसके लिए अदालत ने 31 दिसंबर तक परिसीमन की प्रक्रिया पूरी करने को कहा है। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संजीत पुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश पूर्व विधायक संयम लोढ़ा की याचिका सहित, जयपुर और जोधपुर में दायर कुल 439 याचिकाओं पर फैसला सुनाते हुए दिए। अदालत ने गत 12 अगस्त को सभी पक्षों को सुनने के बाद इन याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रख लिया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीतीश, भाजपा कॉम्बिनेशन इतना अनबीटेबल क्यों है

भाजपा की संगठनात्मक क्षमता, सशक्त बूथ सैटअप व राष्ट्रीय चुनाव अभियान ने नीतीश की विश्वसनीयता व अनुभव को पोषित किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **नीतीश की ईबीसी, कुर्मी, महादलित व गैर यादव ओबीसी पर पकड़ ने एक व्यापक व नया समीकरण प्रस्तुत किया, जिसने दोनों पार्टियों को कई सोशल ग्रुप्स में प्रवेश दिलाया तथा लालू का चिरपरिचित ''एम वाय'' फॉर्मूला महागठबंधन को व्यापक समर्थन नहीं दिला पाया।**

नई दिल्ली, 14 नवंबर। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने स्वयं को एक स्थिर और भरोसेमंद प्रशासक के रूप में पेश करके वर्षों की सरकार-विरोधी लहर (एंटी-इनकंबेंसी) पर काबू पा लिया है। उनकी निरंतरता, मजबूत नेतृत्व और स्थिर कामकाज के वादे ने मतदाताओं की थकान को कम करने और प्रमुख क्षेत्रों में विश्वास जगाने में मदद की है।

भाजपा के साथ उनका समय पर किया गया गठबंधन बेहद अहम साबित हुआ। जिसने उनकी जदयू की क्षेत्रीय ताकत को भाजपा के बड़े संगठनात्मक ढांचे से जोड़ दिया। इसने अलग-अलग जातियों में समर्थन बढ़ाया और उन मतदाताओं को भरोसा दिया, जो एकजुट और स्थिर राजनीतिक विकल्प चाहते थे।

74 साल की उम्र में, नीतीश कुमार ने अपने बारे में उठे संदेहों को गलत साबित किया। उन्होंने पूरी ऊर्जा और फोकस के साथ चुनाव प्रचार किया। जनता के बीच लगातार संपर्क और संवाद ने मतदाताओं को भरोसा दिलाया कि वे एक और कार्यकाल संभालने और प्रभावी नेतृत्व देने में पूरी तरह सक्षम हैं।

महिलाओं के लिए खास योजनाओं और स्वयं-सहायता समूहों के लिए शैक्षिक सहायता जैसी पहल से महिला वोटरों में उनकी पकड़ और मजबूत हो गई। सुरक्षा और कल्याण योजनाओं के उनके रिकॉर्ड ने एक मजबूत महिला समर्थन आधार तैयार किया, जिसने उनके कुल वोटों में बड़ी बढ़ोतरी की।

सड़क, बिजली, कल्याणकारी योजनाओं और कानून-व्यवस्था पर उनका ज़ोर पूरे प्रदेश में पसंद किया गया। रोज़मर्रा के जीवन में बेहतर सरकारी कामकाज का संदेश ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में बहुत प्रभावी रहा, जहाँ लोग लगातार सुधार देखना चाहते थे।

दूसरी तरफ, महागठबंधन की आपसी खींचतान और अस्पष्ट संदेशों ने विपक्ष को कमज़ोर बना दिया। स्पष्ट नेतृत्व और स्थिरता चाहने वाले मतदाता एनडीए की तरफ चले गए, जिससे पूरी चुनावी मुहिम में नीतीश कुमार की बढ़त कायम रही।

भाजपा का मजबूत बूथ प्रबंधन और राष्ट्रीय स्तर का प्रचार भी उनके लिए फायदेमंद रहा। मतदाताओं तक पहुँचने की भाजपा की संगठित रणनीति ने नीतीश कुमार की छवि और अनुभव को और मजबूती दी।

ईबीसी, कुर्मी, महादलित और गैर-यादव ओबीसी समुदायों तक उनकी पहुँच ने एक व्यापक सामाजिक गठजोड़ बनाया। प्रतिनिधित्व और लक्ष्ययुक्त सहायता देने से उन्हें राज्य के कई सामाजिक समूहों का समर्थन मिला।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भू-अभिलेख निरीक्षक 7.5 लाख की रिश्वत लेते गिरफ्तार

- **भ्रष्टाचार निरोधक विभाग निरीक्षक के घर व अन्य ठिकानों पर सर्च कर रही है।**

जयपुर, 14 नवम्बर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की राजसमन्द टीम ने कार्रवाई करते हुए वृत भाणा तहसील कुंवारिया जिला राजसमंद के भू-अभिलेख निरीक्षक कमलेश चंद्र खटीक को सात लाख रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है। यह रिश्वत भू-प्रबन्ध विभाग की ओर से चलाये जा रहे पैमाइश कार्य में आराजियात की मौके के हिसाब से पैमाइश की कार्यवाही करने एवं नक्शा शुद्धिकरण करने की एवज में ली गई थी। फिलहाल भू-अभिलेख निरीक्षक के घर सहित अन्य ठिकानों पर एसीबी की सर्च चल रही है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय कैबिनेट मंत्री का एप्स्टीन सैक्स स्कैंडल में नाम आने से दिल्ली में हड़कंप मचेगा इस बार

पहली बार जब यह नाम आया था तो चुपचाप माननीय मंत्री को इस्तीफा लेकर घर भेज दिया था और आशा की गई थी कि मामला शांत पड़ गया है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- **पर, अमेरिका में ही एप्स्टीन प्रकरण जोर पकड़ रहा है, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप का नाम भी इस एप्स्टीन के मित्र व जानकार के रूप में उभरा है।**
- **बहुत सार्वजनिक दबाव बना है कि एप्स्टीन के सारे ई-मेल व पत्र-व्यवहार सार्वजनिक किये जाएं।**
- **जैसा कि विदित ही है कि एप्स्टीन पर आरोप है कि यह विश्व के अति पावरफुल लोगों को कमसिन बच्चियाँ सप्लाई करता था सैक्स के लिए।**
- **एप्स्टीन प्रकरण की कुछ ई-मेल सार्वजनिक होने से विश्व के कई प्रभावशाली लोगों की बलि चढ़ी है, जैसे इंगलैंड के प्रिंस एन्ड्रू, जिन्हें अपना पद, गरिमा व सुविधाएँ सरेंडर करनी पड़ी, ब्रिटिश सरकार को।**

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। एप्स्टीन कांड जैसे-जैसे अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को और गहराई तक घसीटता जा रहा है, एक भारतीय मंत्री का नाम सामने आने से भारत की घरेलू राजनीति भी अचानक गर्म हो गई है। एप्स्टीन मामला नाबालिग लड़कियों की तस्करी और उन्हें सत्ता और धन के बड़े पदों पर बैठे उम्रदराज़ पुरुषों के सामने पेश करने से जुड़ा है।

सोशल मीडिया पर सबसे बड़ा सवाल यही घूम रहा है, क्या एप्स्टीन से जुड़े एक केन्द्रीय मंत्री का नाम सामने आने के बाद उन्हें मोदी सरकार से हटाया जाएगा? एक ईमेल में मंत्री के शामिल होने के संकेत मिलने के बाद कई लोग इस संभावित आरोप को लेकर गहरी नाराज़गी और घृणा व्यक्त कर रहे हैं।

अगर मंत्री को तुरंत हटाया न भी जाए, तब भी मंत्री और सरकार, दोनों पर यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे जनता को स्पष्ट बताएं कि उस मंत्री और एप्स्टीन समूह के बीच क्या संबंध थे। अब तक न तो उस मंत्री की तरफ से कोई बयान आया है, न ही केन्द्र सरकार की तरफ से।

नैतिकता यही कहती है कि सरकार कम से कम मंत्री से स्पष्टीकरण मांगे और बताए कि उनका नाम एप्स्टीन समूह से कैसे जुड़ा।

इस घोटाले में पहले भी कई बड़े नाम गिर चुके हैं। इनमें इंग्लैंड के किंग चार्ल्स के छोटे भाई प्रिंस एंड्रयू भी शामिल हैं, जिन्हें हाल ही में शाही उपाधि से वंचित कर दिया गया और अब वे सिर्फ एंड्रयू माउंटबेटन विंडसर कहलाते हैं। उन्हें उनके विशाल शाही महल से भी निर्वासित कर दिया गया है।

ट्रंप और एप्स्टीन के बीच की बातचीत के खुलासे की आशंका अमेरिकी राष्ट्रपति को भी भारी राजनीतिक शर्मिंदगी और आलोचना के खतरे में डाल रही है। वे एप्स्टीन से जुड़े दस्तावेज़ों के पूरे खुलासे को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। वाइट हाउस और अमेरिकी कांग्रेस के स्पीकर माइक जॉनसन भी इन दस्तावेज़ों को दबाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

तथापि, अब बड़ी संख्या में रिपब्लिकन सांसद भी अपनी पार्टी से अलग होकर पूरे एप्स्टीन दस्तावेज़ जारी करने के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान में शामिल हो गए हैं। इससे ट्रंप काफी नाखुश हैं और इन सांसदों पर दबाव डाल रहे हैं कि वे अपनी मांग वापस लें।

फिलहाल राहत की बात यह है कि अब तक जारी हुई संचार सामग्री में ट्रंप के सीधे किसी गलत काम में शामिल होने का सबूत नहीं मिला है। हालांकि यह संकेत ज़रूर मिले हैं कि ट्रंप जानते थे कि एपस्टाइन का साथी मैक्सवैल गिस्लेन ट्रंप के मार-ए-लागो स्थित हाई प्रोफाइल गॉल्फ रिसॉर्ट और क्लब से नाबालिग लड़कियों सहित अन्य महिलाओं के रिक्रूटमैंट की व्यवस्था कर रहा था।

भविष्य में ट्रंप एप्स्टीन कांड से पूरी तरह बच निकलेंगे या नहीं - यह अभी कहा नहीं जा सकता। लेकिन अगर किसी भारतीय मंत्री या नेता का एप्स्टीन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिलाड़ा में ट्रोमा सैन्टर का चिकित्सा अधिकारी रिश्वत लेते गिरफ्तार

- **एसीबी की जोधपुर इकाई ने शिकायत के आधार पर ट्रैप की कार्यवाही की।**

जोधपुर, 14 नवम्बर (कासं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जोधपुर की टीम ने बिलाड़ा के राजकीय ट्रोमा सेंटर के चिकित्साधिकारी को 3.70 लाख की रिश्वत लेने के आरोप में पकड़ा है। उनसे अग्रिम पूछताछ जारी है। कार्रवाई शुक्रवार सुबह की गई। एसीबी द्वारा ट्रेप होने वाला चिकित्साधिकारी डॉक्टर बुधराज विश्नोई है।

ब्यूरो के महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि एसीबी की जोधपुर शहर इकाई को एक शिकायत इस आशय की मिली कि डॉक्टर बुधराज बिश्नोई चिकित्सा अधिकारी राजकीय ट्रोमा सेन्टर बिलाड़ा जोधपुर द्वारा परिवादी के भाई को फार्मासिस्ट के पद के लिए नियुक्ति देने के लिए तीन लाख रूपए व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)